II - Semester MJC ACCOUNT

B.Com (1)

Business Organization and Management

एकल स्वामित्व - Sole Proprietorship

Q:- एकाकी व्यवसाय से क्या समझते हैं। इनके कौन-कौन से लक्षण हैं। इसके गुण एवं दोष भी बताइये।

Ans — एकाकी व्यवसाय से आशय एक ऐसे व्यवसाय से है जिसमें एक ही व्यक्ति स्वामी होता है और व्यापार से व्यक्तिगत सारा कार्य वह स्वयं करता है। सारा लाभ उसे ही होता है और हानि होने की स्थिति में वह स्वयं भार उठाता है।

<u>एकल व्यवसाय की परिभाषा</u> — एकल व्यवसाय की परिभाषा विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गयी है जो निम्नलिखित है —

<u>प्रो० जेम्स एल० लुंडी के अनुसार</u> — "एकल व्यवसाय एक व्यक्ति द्वारा एक अनौपचारिक प्रकार का व्यवसाय है।"

<u>जे० एल० हैन्सन</u> के शब्दों में, "एकाकी व्यवसाय एक ऐसी व्यवसायिक इकाई है जिसमें एक ही व्यक्ति पूंजी लगाता है, व्यवसाय का जोखिम उठाता है व प्रबंध करता है।"

एकल स्वामित्व की विशेषता — एकल स्वामित्व व्यवसाय की निम्नलिखित विशेषता है —

(1) व्यवसाय शुरू करना सरल — एकल व्यवसाय करना बहुत ही आसान है। कोई भी कानूनी रूप से जब चाहे व्यवसाय शुरू कर सकता है।

(2) एकल स्वामित्व — एकल स्वामित्व वाले व्यवसाय का स्वामी एक ही व्यक्ति होता है। यह व्यक्ति समस्त व्यवसाय का मालिक होता है तथा सारा जोखिम स्वयं उठाता है। जिसके चलते व्यवसाय के स्वामी की मृत्यु या इच्छा से समाप्त हो जाती है।

(3) लाभ-हानि में कोई भागीदार नहीं — एकल-स्वामित्व व्यवसाय के प्राप्त लाभ स्वामी का होता है। यदि हानि हो जाए तो भी स्वामि को ही उठानी पड़ती है। इसमें लाभ-हानि में कोई और भागीदार नहीं होता है।

(4) एक व्यक्ति की पूंजी — एकल स्वामित्व वाले व्यवसाय में सारा पैसा एक ही व्यक्ति का होता है। यह उसका जुटाया हुआ स्वयं का धन या किसी दोस्त मित्र से लिया हुआ या फिर बैंकों से ऋण वगैरह होता है।

(5) एक व्यक्ति का नियंत्रण — एकल-स्वामित्व वाले व्यवसाय का नियंत्रण सदैव स्वामी के हाथ में होता है। वह व्यापार का संचालन स्वयं करता है।

(6) असीमित देनदारी — एकल व्यवसाय के अन्तर्गत सम्पूर्ण जिम्मेदारी एक ही व्यक्ति का होता है कहने का तात्पर्य है उसकी देनदारी असीमित होती है। लाभ होने पर स्वयं व हानि होने की स्थिति में उसे की निजी सम्पत्ति भी बेचनी पड़ जाती है।

एकल व्यवसाय के गुण — एक व्यवसाय के निम्नलिखित गुण है —

(1) शुरु एवं बंद करना आसान — एकल व्यवसाय को शुरु करना बहुत ही सरल है। यह बहुत कम पूंजी से शुरु किया जा सकता है। तथा इच्छा के अनुसार जब चाहे बंद भी कर सकता है।

(2) अधिक लाभ के लिए प्रेरित करना — एकल-व्यवसायि

द्वारा अर्जित लाभ एवं उसी का होता है। तथा हानि की स्थिति में उसे ही नुकसान होता है। अतः एकल व्यवसायि हमेशा अधिक परिश्रम करने के लिए तत्पर रहता है।

(3) शीघ्र निर्णय लेने में सक्षम — कभी भी व्यवसाय में अच्छा अवसर आने पर वह शीघ्र तथा उचित निर्णय लेने में सक्षम होता है। वह उस अवसर का लाभ ले लेता है।

(4) उत्तम नियंत्रण — एकल व्यवसायिक का व्यापार के प्रत्येक क्रिया कलाप पर नियंत्रण होता है क्योंकि वही योजना बनाता है संगठित करता है एवं संचालन करता है तथा पूरे व्यवसाय का नियंत्रण उसके हाथ में होता है।

(5) व्यवसाय में गोपनीयता — व्यापार में चूंकि वह अकेले होता है। जिसके वह वजह से किसी भी सूचना को किसी से शेयर करना नहीं होता है। अतः वह व्यवसाय में काफी गोपनीयता रख सकता है।

(6) घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध — व्यापार में एकल स्वामी ही एकमात्र व्यक्ति होता है जिससे वह अपने ग्राहको एवं कर्मचारियों से अच्छा संबंध बना लेता है। ग्राहको से सीधा संबंध होने के कारण वह ग्राहक के पसंद को भी भली भांति जान लेता है।

(7) रोजगार प्रदान करना — एकल स्वामित्व वाले व्यक्ति एवं तो रोजगार प्राप्त करते ही है। साथ-साथ कई लोगो को रोजगार के अवसर भी प्रदान करते है। व्यवसाय में दुकानो पर ढेर-सारे आवश्यकता के अनुसार रहते है जो कि व्यवसाय में मदद करते है जिससे बहुत लोगो की बेरोजगारी दूर होती है

एकल-स्वामित्व के दोष — एकल-स्वामित्व के निम्नलिखित दोष है —

(1) सीमित पूंजी — चूंकि एकल व्यवसाय में एक ही व्यक्ति पूंजी लगाता है। एक व्यक्ति के लिए अधिक पूंजी लगाना प्रायः कठिन होता है। अतः कभी-कभी व्यवसाय में अधिक पूंजी की आवश्यकता होने पर वह व्यापार को बढ़ाने में सक्षम नहीं हो पाता है।

(2) अनिश्चित जीवन काल — एकाकी व्यवसाय में एक ही व्यक्ति द्वारा कार्य करता है। दुर्भाग्य वश उसकी मृत्यु या गंभीर बीमारी के कारण से पूरा व्यवसाय बंद हो जाता है।

(3) व्यवसाय बढ़ाने में मुश्किल — एकल-स्वामित्व वाले व्यवसाय में एक सीमा के आगे व्यवसाय को विस्तार देना कठिन होता। यदि व्यवसाय को आगे बढ़ाना है तो एक व्यक्ति के लिए मुश्किल होता है।

(4) प्रबंध-सम्बन्धी विशेषज्ञता का अभाव — चूंकि एकाकी व्यापार में एक ही व्यक्ति होती है। अतः वह उत्पादन में दक्ष हो सकता है। लेकिन प्रशासन आदि में कमजोर हो सकता है।

X ———————— X ———— X

Dr. Raj Kumar Prasad
Associate Professor
Deptt. of Commerce
Sher-Shah College
SASARAM